संत थॉमस स्कूल धुर्वा रांची

सत्र 2020 -21

कक्षा - 8 विषय- हिंदी

पुस्तक- मंथन

पाठ- 17. फूल का मूल्य

लेखक -रवींद्र नाथ टैगोर

प्रश्नों के उत्तर लिखिए:-

मौखिक प्रश्न -

१.प्रचंड शीत के कारण सभी पुष्प सूख गए ।

२.सरोवर के ठीक मध्य में एक कमल दल- खिला हुआ था।

३.भगवान बुद्ध के दर्शनों के लिए निकले थे।

४.राजा और धनिक सज्जन पुष्प भगवान बुद्ध को भेंट करना चाहते थे।

५.अंततः सुदास ने फूल स्वयं भगवान बुद्ध के चरणों में अर्पित किया।

लघु उत्तरीय प्रश्न-

१.सुदास माली के सरोवर में कमल -दल प्रफुल्लित हो रहा था।

२. राजपथ से गुजरे पुरुष ने 'राजाओं के भी राजा' भगवान बुद्ध को कहा।

३. वट-वृक्ष की छाया में भगवान बुद्ध पद्मासन लगाकर विराजमान थे।

४. फूल का अंतिम मूल्य चालीस माशा सोना लगा।

५." हे वत्स! कुछ कहना है, कुछ चाहिए?"

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

१. पुष्पों के प्रेमी राजा इस अकाल में खिले कमल फूल पाकर मुझे मुंह मांगा मूल्य प्रदान करेंगे इसलिए वह राजमहल के सामने उनकी प्रतीक्षा में खड़ा मन- ही- मन प्रसन्न था।

२. जब राजा और धनिक सज्जन कमल- पुष्प की क़ीमत चालीस माशे तक लगा गए, तब माली सोच में पड़ गया । जिनके लिए ये भक्त लोग इतना द्रव्य खर्च करने के लिए तैयार है ,वह पुरुष स्वयं कितना धनवान और महामना होगा। मैं यह फूल उनके चरणों में अर्पित कर दूं तो मुझे न जाने कितना द्रव्य मिलेगा? इसलिए सुदास ने कमल-पुष्प राजा और धनिक सज्जन को नहीं बेचा।

३.सुदास माली ने देखा कि भगवान बुद्ध वट- वृक्ष की छाया में पद्मासन लगाकर विराजित थे। उज्ज्वल ललाट, मुख पर आनंद की प्रभा, ओठों से सुधा झर रही थी और नयनों से अमृत टपक रहा था। मेघों-सी धीर- गंभीर ध्वनि तपस्वी के मुख से निकल रही थी। यह देख सुदास स्तब्ध रह गया।

४.सुदास माली सुंदर कमल- पुष्प के लिए एक माशा सोने की आशा लेकर निकल था,लेकिन जब उसे उस फूल की कीमत का अहसास हुआ। तब वह स्वयं भगवान बुद्ध के चरणों में फूल अर्पित कर धन्य हो गया और उस फूल का मूल्य बस आशीर्वाद मांगा।

४. जैसे ही सुदास माली भगवान बुद्ध के चरणों के आगे झुक कर कमल फूल चढ़ाया वैसे ही वटवृक्ष के सघन कुंजों में पंछी बोल उठे। पवन की लहर आई। कमल की पंखुड़ियां हिल-हिलकर मानो हंस उठीं और सुदास के शकुन सफल हो गए।